

राह / मावासा / कि

एव / डाका

थसा

रू रू

गान

मरुत / याद कलधि / नाम मेमधि / यत्तमधि / वयमधि

कमलध

मवि

ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ गुरुपवनक्राविधान ॥ ऊ धाम
जगितायाः थापनावृद्धात् ॥ हृद्योऽयम् ॥ यद्गवर्धस्वधन ॥ पूजास्वदिशपय
क ॥ गुरुमधुनः दधुनि तिसमाधिः ॥ नापलं धृष्टाव ॥ कलसुयुजाः कलन्या
गा ॥ मधुन विद्यामन ॥ ॐ नमो रं हेतुं है ॥ गं खलं खनहय ॥ ॐ वज्रय कहं ॥
ॐ मदिनीवजीरववज्रवधं है ॥ कलवन्धयाय ॥ नीवाजनः मगद गान्ध्या ॥

अर्कवर्धनपाद्याः देव्यान्नास ॥ मत्स्या ॥ ॐ मदिधनीवजि विमहापगिसस्तन
क २ है रूद्राहा ॥ वृद्धस ॥ ॐ अमृतवन्धवत् २ पवनविशुद्धं रूद्राहा ॥
मदिनस ॥ ॐ अमृतविलाकिनी गह्वरं न कनी ॥ आकर्मदीय है रूद्राहा ॥
पद्मिमत ॥ ॐ विमलविपुलजयवत् अमृतविनज है रूद्राहा ॥ ॐ रुद्रस ॥
ॐ रुद्र २ संरुद्र २ रूद्रिवत् विलाकिनीय है रूद्राहा ॥ ॐ कालियत्वाहा ॥

ॐ कलातीय स्वाहा ॥ ॐ कं कालीय स्वाहा ॥ ॐ वलुण्वनीय स्वाहा ॥ यश्च यज्ञान
यज्ञा सु वि ॥ ॐ यन्मित्र नमस्तु सर्वसम्यग्निदायनी ज्ञातु कुतुब वदा स्वा
सर्वसे स्वात्मकायना ॥ ॐ कृष्णकुम्भमहाद्याना कायशिमसि घनी इदं निरुत सी ह
नी काधे वजी नमाम्यहं ॥ ॐ महाह्वानाहवा दवी हमवर्धुपुलाकनी । मासूनी
यनमस्तु र्विद्याना स्त्री नमाम्यहं ॐ दाव वका विगा ला की विक वा म्हा

ॐ हानिवापन्ननागपुण्यदवी नमस्तु जगन्मातनी ॥ ॐ वैश्वर्याशुक
निर्गतामदनास्तु कविगुमा । कात्या दन्द दनी रुनी नमामि दिव्यवृषि
नी ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीविवनवगुहज्जुमिस्तु ॥ ॐ श्रीकर्मलयाद्यादिपुत्रा
न्यास ॥ ॐ मया क्राय स्वाहा ॥ ॐ गी गगन स्वाहा ॥ ॐ नका गकना ना
य स्वाहा ॥ ॐ वृषाय स्वाहा ॥ ॐ रामप्रसादाय स्वाहा ॥ ॐ असूनाह

पहात्रयूजासु नि ॥ नमो नानास्वरूपाय नमो नमो नमो नमो निरुद्धादि
स्वरूपाय नानास्वरूपाय नमो नमो ॥ ० ॥ धनलोकाय नमो ॥ धान्या
दियूषा नमो ॥ ॐ हृन्दाय सुत्राधियनय स्वाहा ॥ ॐ यमाय पुत्राधियनय
स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय नागाधियनय स्वाहा ॥ ॐ कृवाय यक्षाधियनय
स्वाहा ॥ ॐ अग्नये गजाधियनय स्वाहा ॥ ॐ नैऋत्ये वाकसाधियनय स्वा

हा ॥ ॐ वायुवेयवनाधियनय स्वाहा ॥ ॐ वृष्णा नारुताधियनय स्वाहा ॥
ॐ वज्रलोकाय धियनय स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्माय नरुताधियनय स्वाहा ॥ ॐ सूर्या
यग्राय धियनय स्वाहा ॥ ॐ पृथिवीलोकाय नमो स्वाहा ॥ ॐ धाम विनायक
सुत्राधियनय स्वाहा ॥ ॐ नागाय उलाधियनय स्वाहा ॥ पश्चिमपहात्रयूजा
सुनि ॥ ॐ हृन्दाय नमो स्वाहा ॥ विनालोकाय नमो स्वाहा ॥ विनालोकाय नमो स्वाहा ॥

नैलाकयालनमास्य हं ॥ नद नू दानर्ल कायु धि स्तान ॥ जाय स्तानम ॥ नद
नू जानक अ धि स्तानयाय ॥ नन गुरु खडाव ॥ धन दाव वषूनीयू जायाय ॥
धनिव नाह नम कायक स लि वा कून ॥ ज ज मानक ननक ॥ यडास्तुति ॥
धन विधान र्थ यक व का सक अर्ययाय ॥ ज ज मानक जानक न निमकु
न ग थाय नम ॥ अग्रम सरुलं जत्म सरुलं जी विनयम समय २ द वान

रुविशाहनसंगाय अवेवहि र विष्णामिवा वि विरुनयनसा नथग
माकलात्य हिममादि स्तान संग य अग्रम दिव सह यज हूम विद नरु
प्रसन्नियागा र व दय सर्ववर्द्ध निमनुयाम्य हं ॥ ० ॥ धूय ॥ कर्पूर
जज मान स्तानक पाय अग कनु गुरु मडुले ॥ धनयति स वाया अर्य ॥
हव ॥ अग्रादि ॥ जज मान स सर्व विष्णाय गान्क र्य सव्य पिडवमाव

न गुरुभक्त्याय नृत्पुत्ररक्षणं कुरु नमस्तदा न उँ आर्य मदायु निस्र
दविरुद्धात्र कायश्च न कर्मलाय अर्थपुनिक स्वाहा ॥ उँ म विधनी व डि
नीमहाशय निस्रत्र २ क ईरुद्र स्वाहा ॥ ॐ न चन्दन ॐ न ज्ञायवी
न ॐ न पूषा पुनिक स्वाहा ॥ पयसामृतं गु गु निपुनीक स्वाहा ॥
कयत्र धूप निमनूयामा ह्रीं ॥ ॐ पुनिस्रत्र नमस्तु सर्वसि
॥ ॐ न नज न य नित्य कृद दिना स यथावयाम ह ॥

न्य निदायनी नरिव कुरुद्र व पुनरा सर्व स्वात्म कायना ॥ २ ॥
थन साहस्य मद्रनीया अर्थ नीत् ॥ अयादि ॥ उँ जी धासन का ना
य शीम नृणी म हा साहस्य मद्रनी दवी रुद्धात्र काय अर्थ पुनिक
स्वाहा ॥ उँ अमृत व न व न र सवन विष्णु क ईरुद्र स्वाहा ॥ कृष्ण चन्द
न नम ॥ कृष्ण चन्दन वीनक कृष्ण पूषा नम ॥ गु गु नृ धूप निमनू

याम्यहं ॥ पञ्चमृगलुगुनियुनिकुखाहा ॥ भूमांनजगद्यदितव
उविद्रुददिवानिर्ग्याग्याम्यहं ॥ सुनि ॥ कृषुवर्गुमहाध्याना
काधमाहीमरीषणी ॥ इदंनरुनसहनीकाधवर्जिनमाम्यहं ॥
१ ॥ धनमहामायत्रीयाज्ज्यैष्यनाग ॥ अत्रादि ॥ उंजीकासनका
नायशीमगुमीशीमहामायत्रीदवीरुहानकायज्ज्यैष्यप्रयुखाहा ॥ उंज्य

मृगविलाविनीगरं सनरुणीज्ज्यैष्यदीर्घं १ यप्रखाहा ॥ पीनलग्न
त्रायन्दननम ॥ पीनउहायवीनकपूर्यनम ॥ श्रीवासधूर्पनिम
नयाम्यहं ॥ पञ्चमृगलुगुनियुनिकुखाहा ॥ भूमांनजगद्यदित
नरुनविद्रुददिवानिर्ग्याग्याम्यहं ॥ सुनि ॥ महासुना ॥
इवाकवीसमवर्गुपुखाकत्री ॥ मायत्रीवनमामुखविद्यानाहीनम

महं ॥ ३ ॥ धनमन्ता नूसा निशीया ऊर्ध्वमानि ॥ अयादि ॥
॥ उँजीया समका नाय श्रीम गृणी श्रीम हाम नूसा निशीय वीरुदा
नकाय ऊर्ध्वपतीकुस्वाहा ॥ उँ अमृग विला किनी गरुसं वरुनी वि
पूत विनज हंरु द्वाहा ॥ नकवन्दननम ॥ नकज हापवी नकनक
पूयपुतिद्वस्वाहा ॥ कमुत्री धूर्पनिमनया म्पहं ॥ ययमृग उगु
॥ म्पमान्ता नव निमुपु म्पकिना निर्यातया म्पहं ॥

ति यमीकुस्वाहा ॥ मुनि उँ या नूवका वि शा ला की विकवा म्पानू
हानिय ॥ पुद्गना गपुहा देवीनमस्तु गगमाकनी ॥ ४ ॥
धनगवतीया मन्त्र ॥ अयादि ॥ ५ ॥ उँजीया समका नाय श्रीम गृणी श्री
महाणी गवती देवी रुदा नकाय ऊर्ध्वपतीकुस्वाहा ॥ उँ हन २ सीहन २
ह्वन्दव व विला किनीय हंरु द्वाहा ॥ हनिनयन्दननम हनिनजहा

पवीनकपूरनम ॥ गीतधूपनम नुयाम्यहं ॥ यत्रमृगसुखनिपजी
कृत्वाहा ॥ धूम्रानजगर्घटिनविश्ववज्रविह्वलकीर्णसंवेदायाम्यहं ॥
मुक्तिर्ध्वंवेष्ट्यशुकनिर्वाहा मदनोत्सुकविजया कारवायकुंदनिह
नीनमामिदिव्यवृषिनी ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ धनश्रीदिलया ॥ यत्र
नाम ॥ अथ ॥ ॐ नमोऽस्मिन्दिवायकाश्याययूगाय ॥ अंगसंगरसरिता

य ॥ अत्रनसंहिताय ॥ कर्कशगनपद्मनागवंधूककूस्मसहनाय ॥ अथ
नाविदवताय अदिलयाय ॥ नकूपपूषानकूगन्धनकूजशुपवीनपियाय ॥
कुर्वगत्रयमात्रुदाय ॥ दवदानवकुञ्जकिनीसंहिताय ॥ अत्रनत्र २ रम
वन्नानूषावर्गहिगार्थाय ॥ अस्मिन्नगुरुमगुरुमल्लयानूयविगमवृद्धम
दुग्धपूषधूपदियापहारवलिचयुनिगृहता ॥ नमोऽस्मिन्दिवायकाश्याययूगाय ॥

[illegible]

॥ यन सानया ॥ अ यमृति ॥ ड नमा सा माय की न मे य
ना द्वाय, शांति नद वनाय अ नृ न कूल द व नाय, नम्रा सु नाय, अ व न
ने २ द ग व न म नू ष्या नां दि ना र्थाय, अ स्मि न् ग द म सु ल म, अ नू
प वि ष्म द म द न ग न य पू ष्या धू प दी पा प दा न व लि अ व नि गृ ह्णा
न मा नृ न य स्र जि य न न स्र प्ति नि क प्रा स व न गा नि पू ष्ति न का कू नू ता मा

अर्चयति कृष्ण ॥ (अथ सुवन्दनं नमः) (अथ सुज ह्यपवी ग क पूषानमः ॥
॥ कर्पूत्र धूप निमक्तु यामिह ॥ दधिघृण दन रुक्म मयटाषया मृदं ॥
मृमन्त्रिण नमः मि न सरवद किना वृ हिया ग स्यु टारवयाम्यह ॥ मुनि पुं हं ॥
वाहन संस्तान गीर्गां माल विग्रहं ॥ कन्द उरगा न सी कल्प निष्ठा कर्तनमा
महं ॥ यन अंगवया ॥ अर्चयन् ॥ (नमो अंगनाय अमृगारुक्ल

अथ गाय महादेव पूजय धनवी सुताय (हम उ कू सं द लि गाय च क वा
सुत्र कृष्ण च कृष्ण ह्यप विनयियाय क्का ग समा नू यय वज धृ क कूल दवना
य दय दान व कृष्ण ह्यु जा किनी सहि गाय ॥ अ व ग ल २ ह ग व न्न नू षा ना हि
गार्थिय ॥ अस्मिन् गुरु म ह्यु ल म (अथ अ नू य विष्णु हं द म न्न ग न्ध पूषा धू
वदि धाय दा न व लिख्य नि गृ ह्ना य स्य क्रिय न न स्या सी नी क त्रा ह ग व न्

मनियुष्टिनका कुरुमिसनाय अर्धयनीकृताहा ॥ उत्रकागिकुमात्राय स्वा
हा ॥ नकुचन्दननम नकाजहायवीनकवृष्टनम ॥ गुगुनूयनिम
नयासाह ॥ माषगुगुहकनउयडाषयान्महा ॥ मत्सुमाससुनायानय
क ॥ नम नूनदानुसर्वपयीरियाणदिसयडाषयान्महा ॥ कुनि ॥
विनयोसुनमहागड ॥ लादिनागसुष्टाहिन ॥ गकिरुक्तमहाकाय

अननयनमासु ॥ १ ॥ धनवृक्षया ॥ अर्धवेइय ॥ उत्रका
वृक्षाय ॥ उत्राहिसुखाय ॥ विमुष्टुनवाधियद्वनाय ॥ नूनकूलदवनाय
सामसुनाय ॥ गहिनीनकनाय ॥ वृषायपीनगन्धपीनयुषापीनजसु
पदीनदिनाययडासनाय ॥ अवनन १ ॥ गवन्मनूष्यानीहिनाथीय
अस्मिन्नगुहमदलम ॥ अन्नयविष्ठा ॥ दमकनगन्धपूषाधूपदीया

पुनः वलि अमुनि गृह्णन् नमो मुने यथा क्रियते न सायी निकत्रा रगवन्
गानि पूषि त्रक्रा क्रुद्रु पाय जूय्युनी कृत्वा हा ॥ उ वृषाय स्वाहा ॥
पीतलग्न शचन्द्रन नमः पीतज स्वायवीन कपूर्व नमः ॥ गन्धन स धूपनि
मनुयाम्यहं ॥ मृदुमाषक सत्ररुक्रम पटाषयाम्यहं ॥ शुभ्रास्व
र्गुसर्वयती हि पाजादि संपुटाषयाम्यहं ॥ मुनि उ वृषाय सामय

शायपी गवर्गु सुलभादिन पदि जगतां सर्ववृषदर्वन माम्यहं ॥
८ ॥ धनवृहस्य निया अर्धपूषा राग ॥ उ नमावृहस्य गय
वृक्ष विदवताय शुद्रुदवताय वलकूलदवताय अंगनसुताय
चतुर्वेदाय दवगुत्र्याय पीतवासपीनपूषा पीतज स्वायवीन
पीयाय अक्षायदवताय दवदानव रानुज किनी सहिताय

अवगन्तुं गन्तव्यं नृणां हि तार्थं यः अस्मिन् गृहमधुलमधुय
नृपविष्णुर्गृहमधुनपूष्यधूपदिपापहानयनिगृह्णन् नमो मुनि
यस्य कीयन्तस्तपोगिकनारगवनः ॥ निपूषिन्काकूजजमान
स्य ज्ञायुत्कामा र्थं शागास्यदाय अर्घ्यणीकृत्वा हा ॥ उं शागास्यदाय
हा हा ॥ पीतलग्ननाचन्दनं नमः पीतजहापवीनकपर्षीनमः ॥

युवमधुपूषीनिमक्त्याम्य हं ॥ दधादन्तर्हीनरुक्मि मूषटाषयाम्य
हं ॥ ॥ ॥ हवर्षुयववृदिपात्रादि संयुटाषयाम्य हं ॥ मुनि ॥
उं जामूनदसूवर्षुयववृदिपात्रादि संयुटाषयाम्य हं ॥ मुनि ॥
हस्तगिनमास्तु ॥ ७ ॥ धनशुक्रया ॥ अर्घ्यं हन ॥
उं नमो गुकाय शागीवदवमाय वदन्तानाय प्रसूना विधवगा

स्वीसर्वगालुसमानः देवानीं भुवनेषु सर्वशुक्रस्त्रियनमाम्यहं ॥
॥ धनं जनिवन्त्या ॥ अर्थनील ॥ ॐ नमो जनिवन्त्या ॥
सुजातिदत्ता कायः शुक्राश्च कलाहवायः आदिना पूजायः क्वाया
नायः शुक्राश्च दवगायः नीलवासनी लक्ष्मीयवीगपीया
यमा नून्यः दवदानवर्षः हलुज किनी सहितायः ॥ अथ

॥ रुग्णवन्मनूयानीं हि गार्थः ॥ अस्मिन् एव मन्त्रे लम्बा अन्तरा
यिना एव मन्त्रे गन्धपूषा धूपदिपाय हात्रप मिश्रुता गानः ॥ लुप्यसा
क्षियमः ॥ श्रुतीनिक नारुणवन् गान्तिपूषि नक्तः कुरु कुरु वदुः ॥
अर्थसिगिकः ॥ कमुनीयन्दनं नमः ॥ रुनिगजः क्षापवीगकाय
यानमः ॥ गन्धः पूषा निमन्त्रया म्यहं ॥ मन्त्रा मायः रुक्मूटा वया

(K)

भातंग नरुमागविष्यदधिनामाषत्रीहिपाशादि संप्रदोषय
महं॥ सुनि॥ निरुकावमहाचन्द्रनीवदहाचसुप्ररः साड
यान्पमाख्यातमनिम्बननमनुते॥ १॥ अमनाह्यातरेव
नः नावह॥ केननाताहवे कालाग्निदेवताय अर्धोत्प
लाकृवाय सिंहसुतायः अमृतपिपाय॥ सुलिम्बनः



यामाह ॥ धनवृद्ध्या ॥ ॐ नमो यथा सामयुगाय नारिनी नरुगाय
वज्रसंश्लेषदवगाय ॥ उजमानस्य वृक्षगुहात्यन्तपीजयगन्तव्यार्थ
युक्तमार्थः सर्ववृद्धिदक्षिणापीनसर्ववृद्धिहिपागदिसंयुक्तधयाम्य
हं ॥ धनवृद्धस्यगिया ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगय वृद्धदाय दव
लुन्या धाम्य ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ
युक्तमार्थः ॥ ॐ मां सर्ववृद्धिदक्षिणापीनसर्ववृद्धिहिपागदिसंयुक्तधयाम्यहं ॥

धनवृद्ध्या ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ
युक्तमार्थः ॥ ॐ मां सर्ववृद्धिदक्षिणापीनसर्ववृद्धिहिपागदिसंयुक्तधयाम्यहं ॥
धनवृद्धस्यगिया ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगय वृद्धदाय दव
लुन्या धाम्य ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ
युक्तमार्थः ॥ ॐ मां सर्ववृद्धिदक्षिणापीनसर्ववृद्धिहिपागदिसंयुक्तधयाम्यहं ॥

नूमाववीरिपाठादिसंयथादयाम्भदं ॥ धनमाह्वया ॥ ॐ नमात्राहव
अमृतपियाय सिंहराजय कृतिगोश्वरदवगाय ऊडमानस्यमाह्वय
हात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ आयुस्कामार्थं वृहमीखगदक्षिनाकालमाववी
हियाडादिसंयथादयाम्भदं ॥ धनकंदुया ॥ ॐ नमाकगदकाग
सूनाय स्वर्गियागहसाय ऊडमानस्यकंदुगुहात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ
आयुस्कामार्थं वृहमीनजगदयतिगयतिविम्वकगदक्षिणाकुलनृवी

याडादिसंयथादयाम्भदं ॥ धनकंदुया ॥ ॐ नमाजगदकाये ऊ
डमानस्यऊडगुहात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ आयुस्कामार्थं वृहमीन
जगदयतिगयतिविम्वसञ्जादक्षिणाआयुखुगद्वनवीरिपाठादिसं
यथादयाम्भदं ॥ १० ॥ शिवदक्षिणा हादक्षिनाविय ॥
॥ धृतिदानवियवाक ॥ ॥ ध्यालिव वनवृनीवाय
कं दाखासव्यक ॥ धनऊडमानकाय एषधन ॥ महुल

कनक \ विसर्जन \ नवाङ्गन \ नवदुर्गात्रया \ सुखान \ नष्टाव
 जातकलाय \ सदनत्रय \ वज्रत्रया विय ॥ धनस्वानमान
 या ० समाक \ गुत्रयुजा \ दक्षिना \ नष्टाव वियक \ दक्षिणी
 समय \ रुमायन \ लक्षाविय \ आनी वीदसुखान \ अस्थिक ॥
 आकुरु \ समय ॥ माहिकावलिच्छा \ नाह मरुत्तमानसकाय
 गृहवलि \ नवगृहपी ० सकाय ॥ यनयगिद्धाय ॥ वज्रयायकत्रकाय
 वज्राप्राननत्रयायवद्विविदि वात्राचक्रावनीदी कोमालि कर्त्तिकामागपिव
 निमन्मय देवकीभयमानाः वागहि वादयनि पदुमत्रयतहा नृपमानात
 श्री चामुका जपलम्भा हनगागहिनाः मातत्रावतलम्भु ॥ १ ॥

॥ यत्र वज्रावलि दक्षिणीवलि धनकाय ॥ शुभावलि ॥ दानत्रका
 नाय ॥ ० नित्यकत्रका विधान समाक पा ॥ ० ॥ ॥ ॥
 १० नमास्त्रिकाथे ॥ वज्रावलि वज्रसादी वि वज्रमत्वविहदनि वज्रयुग
 विनयापि वज्रयुगयनायदी हंसयुग विमानत्त सीमायुगी विनामदे
 पूरककयमालय रत्नदाययानिना विनयुगयनायदी विनामी
 विनवासना विनायहावसिद्धि विनमन्मन्त्रयनि उद्भवलम्भना

वस्तु ॥ यथागच्छवाहिनी ॥ पूर्वपी ० स्तिगानिर्णय ॥ चक्रग किनमानुग ॥
महेश्वरीमहामाया ॥ महामाया नृलीङ्गनि ॥ महावृषरुमावृय ॥ महा
हंकावनादनि ॥ हिमसूक्तिनिर्दह ॥ कथात्रकृन्नावनी ॥ शिवाचनि
शिखरव ॥ अक्षसूक्तकमलुत्र ॥ नासाकात्रलसवादि ॥ दक्षिणनव
त्रयदा ॥ श्रुद्धिस्तिगिनिनासाथ ॥ सर्वव्यापिसुत्रवनी ॥ लवणपूषावनी
दवी ॥ लवणगी ॥ लवणवाहना ॥ लवणवधुपिनिधाना ॥ मूकालवधुपि

गा ॥ वात्रानस्यीमहाकृन् ॥ गात्रावृक्षानिनि ॥ उरुवाया स्तिगानिर्णय ॥
महेश्वरीनमानुग ॥ ॥ वालरागमहापीदि ॥ कामावित्रकृन्नावनि ॥
त्रकृवमयनिधाना ॥ सिधुनात्रलविग्रहा ॥ यदुद्रुजाशिखराच ॥ सिद्धि
पाणधनागूला ॥ कूमात्रयत्रमदव ॥ मयूत्रायविर्हस्तिग ॥ त्रकृवधु
सूत्ररुगी ॥ त्रकृमात्राविरुपिगा ॥ कोव्यायमहाकृन् ॥ वदुद्रुनिवा
निनि ॥ अक्षुयचिस्तिगानिर्णय ॥ कोमात्रीनमानुग ॥ ॥ वीधुवीवि

पुमायायं देवद्वन्द्वनिदानुदा हविगसामनक्रीणी गन्तुं पत्रिस
 संस्तिनं गन्तव्यं गणहस्ता चतुर्द्वारविहविता नकुकावामहा
 कीजा नानावत्तविहविता हविगयथागन्धर्व सदाहविगय
 योजि सुभूमसुवयागाव किमिच्छेयं सस्तिना अरुहासम
 हाकृत कन्दववृकवासिनि निष्ट किचि ० नेकस्य नानास्य
 दीनमामुक्त ॥ वावाहीयावन्पीव नकुकाजिमहादवि उद्वेक

नात्रगर्हीव वावाक्यत्रकवाचनि कपावमात्रावत्ता विविगय
 यागानिना महामहीधमात्राव कविताग्निसमयका मीनाकु
 नकुकि कादवत्ता हावावत्तावविता विनेय कविनदेह उद्वेक
 यविनासनं उकाविकमहाकृतं वृमवृकसमागिता याम्यपी०
 किमानिनी कालवृषिनमामुक्त ॥ मुकग्वरीसहस्राक्षी ककुमान
 सविग्रहा सुनग्वरीमहादवि सर्वात् कालरुषिणी उद्वेक

नदिल्लदिसम्यक् ॥ रुक्मवर्गमालया किन्त्या ॥ यनिवा नाथ नाकृसा ॥
दविकोटमहाकृष्ण ॥ उड्डव नसमा सिनी ॥ वायुपी ० स्किगानिही ॥
जाम्बुजायेनमानम ॥ महालक्ष्मीमहादधी ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
वैद्युत्पायुकात्रया ॥ सिंहासनसूर्यसिंहा ॥ यदुज्जोविमालाकी ॥
गरवद्वकमहाधुना ॥ भायनाहावकयूना ॥ यलकृतुलधविगी ॥
नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ दूगमतिविह्विता ॥ विविगपूष्यजनी

च ॥ वसुगर्गमानुचयिनि ॥ मेला कृवायिनीदवि ॥ सर्वस्वा
सचलाचर ॥ सिद्धिगान्धर्वनमिता ॥ विशाधनसूना सिता ॥ च वि
जयमहाकृष्ण ॥ वनवृकृनिवासिनि ॥ श्ठीगानपी ० संस्कारनमा
हालक्ष्मीनमामुन ॥ अष्टकृष्णसिंहादवि ॥ अष्टवृकृनीवासि
नी ॥ अष्टरुहवसंयुक्त ॥ अष्टमारुनमामुन ॥ जननी सर्वव्या
ना ॥ सर्वसत्त्वापकाविही ॥ सर्वदाधरनादवि ॥ संसाधकृष्णनी

दायिमा \ सर्वादिनखमजय \ कृता विप्रवर्तनिहा \ ब्रह्म पि ० स्तिगा
निर्य \ अष्टकृत्तनिवासिनी \ अष्टमूर्तिस्तिगायत्री \ अष्टकृत्ताभि
द्विस्तिगा \ रुद्र पि ० स्तिगा निर्य \ रुद्र काली समास्तना \ रुद्र कान
वकलाव \ वील रुद्र नमामुते \ अग्निनाग नृपुत्रव \ चन्द्रो थ काव
रुद्रव \ उत्तमर्ग कयालरीषदा \ सहानरीषदानथ \ सदान अष्ट
कृत्तवाष्ट नमामुते ॥ ~~सर्वकृत्तन~~ स्वाधिकार्य \ सर्वकृत्तन विप्रवर्त ॥

सर्वकार्यप्रवर्तन \ दिवान्न विप्रवर्तमिसा \ दग्गदिक्कृत्तन पाल्य
कृत्तन वचरुद्रग \ पंचाग्न कृत्तन पाल्य \ कृत्तन पाल्य नमामुते ॥
~~नाथ नाथ महा नाथ~~ \ आदिनाथ महात्मना \ श्रीनाथ सिद्धिनाथ
क \ मीन नाथ नमामुते ॥ कृत्तन नाथ वीथय \ दीपनाथ महात्मना
युगनाथ कृत्तन \ वरुकनाथ नमामुते ॥ ~~तिनाथ नवनाथ~~
षादगनाथ नमामुते ॥ सखा विप्र निद्रि पंचाग्न \ श्रीनाथि किनमामुते ॥

सर्वविनाथसिद्धान्तं । रीतानां त्रिकलाकुलं । शांतासुखं तथा वीर्यं ॥
 कृतसर्वविनाशमालुन ॥ उवाकाकावहिकालेयं । यप ० निनरासुखा ॥
 पथित्वा सर्वभक्तिना । पापानि हि क्षियमूर्ध्नि ॥ नासथ नृणां कवि
 नानं । नागयद्विद्युदवना । नागयत्कुरुवाग । नागयद्वरवड
 द्ववा । नागयत्तुवदोत्रिदं । नागयद्विपुमूर्ध्नि । नागयद्विगुवा
 नादि । नागयत्सर्वविद्युन ॥ नागयत्सर्वविषयान् । नागयद

रियात्रुन ॥ नागयत्सर्वकलानि । नागयत्सर्वयुतर्न ॥ उवाका
 पातयमेवय्य । धनधान्यविवर्धनं । धर्माधकाममाश्रयं । यत्नात्ता
 राग्यमूर्ध्नि । अद्विष्टिद्विबलश्रीय । विद्यानास्त्रासूनाचिन । पापानि
 निजिवसत्यय । यत्तुसुखं रागव ॥ ५० निजीद्वद्वदीनायसमा
 क ॥ ५१

धर्मसु

(५)

५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

१ आकाशावतनियद्वि चतुर्विधकादय यस्तु कर्म
सुदृष्टाये दवनाज सरुत्वा वीटुक कर्मसकथगी ॥
गुक्ताग्यवतनपूर्ववनिर्णय आकाशमयि रूत नवध
दृष्टग्याहाया अहाद्विपात्रावस्तु वनधूनि चतुर्विधाय ॥
वनधूनि ॥ दूयनिर्णय धर्मसन्निव आकाशावतन
नयावद्वत दूयनिर्णय स्रष्टाकवहाव समस्तद्वय

नाका श्रुत्यासरुत्वा ॥ मयमलुलस यथि मज्ज
कर्मयाभाषक कदमाधमान ॥ नात्रनावधाय ॥
रुनाविबहाव ॥ यागात्रवसन्नागात्र नानात्रलविक
विन विवाहधनकनका वात्रय नि निवपीय ॥
यागात्रसवसत्रय नागत्राग सयत्राग मद्रुत्राक
दूयनिर्णय यागात्रयुत्रिवहाव सगलसमृद्धया म

वैश्वानरं वायुं किं नागनाकहावनाथमात्रं पथिग्व
मखमन्दत्रयोऽथ कर्मया वाणरिव कर्मवनाथमात्रं ॥
गङ्गावनाथ ॥ योजनाय ॥ ॥

२ सिद्धा गज २ सिद्धा गज २ जाल ॥ सी वना वष वसनी
नाना वंता जाल ॥ व क ०० स जाल व क यि सख वंता
द्व व स य क ०० न ग्रा वा म या जाल व ज आ गी नी सा
हा ॥ व त र न कि मी या न र जाल ॥ ७ सि त व थ त क ल

७ रु रु रु सा हा ॥ व त र मा त व य र जाल ॥ ३ सि ध त
ज रु रु रु रु सा हा ॥ व त र ॥ ॥ २

२ जाल व त क य ०० ॥ ३ जाल व त क य ०० ॥ ३ जाल व त क य ०० ॥
व स ॥ त न त र ल ॥ क रु ॥ ग य ॥ रु त य व रु द न ॥ दा
वा दि य ॥ रु म पा स ॥ वा स कि अ त ल ॥ रु मा त

सं

सिसा

विक

गन्ध

नकायन्द

किलस

नानिष्पान

लीखन्द

हाकस

कनवस

नकायन्द

अकिल

वाकस

नकायन्द

अनास

स्वाय

नकायन्द

अनास

रुमस

लीखन्द

उलास

हन्त

कसुनि

किहोस

मान

नकायन्द

अनास

मन्त्र

नकायन्द

अनास

एच्यस

नकायन्द

अनास

नकायन्द

लीखन्द

अनास

नकायन्द

कसुनि

सिसा

विन

सा न धा प्रः श्री न